बी.एच.आई.सी. 134

भारत का इतिहास: 1707-1950

परीक्षा के लिए महत्वपूर्ण प्रश्न

आसान भाषा में सभी प्रश्नों के उत्तर

Scholarly Minds

1. क्या अंग्रेजी शासन ने भारतीय अर्थव्यवस्था को अपने अधीन लाकर अपना स्वार्थ पूरा किया?

अंग्रेजों ने भारतीय अर्थव्यवस्था को पूरी तरह से अपने साम्राज्यवादी हितों के अनुसार ढाला। ब्रिटिश साम्राज्य ने भारत को केवल कच्चे माल का स्रोत बना दिया, जबकि तैयार माल का उत्पादन ब्रिटेन में हुआ। इससे भारतीय उद्योगों को भारी नुकसान हुआ।

ब्रिटिश नीतियों ने भारतीय किसानों को ऋणों के जाल में फंसा दिया और भूमि करों की अधिकता के कारण उन्हें लगातार संकट का सामना करना पड़ा। उदाहरण के लिए, **जमींदारी व्यवस्था** के तहत किसानों को अपनी भूमि का मालिकाना हक नहीं था, और उन्हें अत्यधिक करों का भुगतान करना पड़ता था।

इसके अलावा, ब्रिटिश सरकार ने भारत से रियायती दरों पर कच्चे माल, जैसे कपास, रेशम, और धातु निकालकर अपने उद्योगों को बढ़ावा दिया। ब्रिटेन में तैयार वस्त्रों को भारतीय बाजारों में भारी छूट पर बेचा गया, जिससे भारतीय हस्तशिल्प और बुनकरी उद्योग पूरी तरह से नष्ट हो गए।

अंग्रेजों के इस आर्थिक शोषण का नतीजा यह हुआ कि भारतीय अर्थव्यवस्था बहुत कमजोर हो गई, और ब्रिटेन की संपत्ति और शक्ति में वृद्धि हुई। इससे भारतीय जनता की स्थिति दिन-ब-दिन बिगड़ती गई, और यह स्थिति स्वतंत्रता संग्राम को तेज करने का कारण बनी।

2. राष्ट्रीय भावना उभारने में बंगाल विभाजन और स्वदेशी आंदोलन की भूमिका की चर्चा कीजिए।

बंगाल विभाजन (1905) ब्रिटिश सरकार द्वारा किया गया एक महत्वपूर्ण कदम था, जिसका उद्देश्य भारतीयों के बीच धार्मिक और जातिगत मतभेद पैदा करना था। ब्रिटिश शासकों का मानना था कि यदि बंगाल को विभाजित किया जाता है, तो वे हिंदू और मुस्लिम समुदायों को आपस में लड़वा सकते हैं, जिससे भारतीय राष्ट्रीयता कमजोर होगी।

लेकिन इस विभाजन ने भारतीयों के मन में अंग्रेजों के खिलाफ एक नई चेतना पैदा की। **राष्ट्रीयता की भावना** और एकता के प्रतीक के रूप में बंगाल विभाजन के विरोध में भारत भर में आंदोलन शुरू

हुआ। इस समय पर **स्वदेशी आंदोलन** ने जोर पकड़ा, जिसमें भारतीयों ने ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ आक्रोश दिखाया और ब्रिटिश वस्त्रों का बहिष्कार किया।

स्वदेशी आंदोलन के दौरान, भारतीयों ने अपने देश में बने उत्पादों का समर्थन किया और ब्रिटिश माल का बहिष्कार किया। इसने भारतीयों को अपने उत्पादों और संस्कृति पर गर्व करने का अहसास कराया। बंगाल विभाजन और स्वदेशी आंदोलन ने भारतीयों को यह समझाया कि एकजुट होने पर वे ब्रिटिश साम्राज्य को चुनौती दे सकते हैं, और इस प्रकार राष्ट्रीय एकता और स्वतंत्रता संग्राम को मजबूती मिली।

3. स्वराज के लिए गांधीवादी संघर्ष के वैचारिक तत्वों और राजनीतिक तरीकों की चर्चा कीजिए।

महात्मा गांधी का **स्वराज** का विचार केवल राजनीतिक स्वतंत्रता से अधिक था; यह भारतीयों के आत्मनिर्भर और आत्म-सम्मान की भावना से जुड़ा था। गांधी जी ने यह माना कि ब्रिटिश शासन का विरोध केवल हिंसा के माध्यम से नहीं किया जा सकता। इसके बजाय, उन्होंने **अहिंसा** (non-violence) और **सत्याग्रह** (non-cooperation) के सिद्धांतों का पालन किया।

गांधी जी के विचारों का उद्देश्य यह था कि भारतीय लोग स्वयं को शारीरिक और मानसिक रूप से स्वतंत्र करें। उनका कहना था कि एक स्वतंत्र भारत केवल राजनीतिक स्वतंत्रता से नहीं बन सकता, बल्कि यह तभी संभव है जब लोग आत्मनिर्भर हों और अपने संसाधनों का उचित उपयोग करें।

गांधी ने राजनीतिक संघर्ष के लिए शांतिपूर्ण विरोध के तरीकों को अपनाया। उदाहरण के लिए, **नमक सत्याग्रह (1930)** और **नमक कानून का उल्लंघन** जैसे आंदोलनों में उन्होंने ब्रिटिश कानूनों का विरोध किया, लेकिन कभी भी हिंसा का सहारा नहीं लिया। गांधी जी का यह विश्वास था कि अगर भारतीय लोग पूरी तरह से ब्रिटिश शासन का बहिष्कार करते हैं और अपने देश में बने उत्पादों का उपयोग करते हैं, तो ब्रिटिश साम्राज्य को आर्थिक रूप से नुकसान होगा और वे भारत से बाहर चले जाएंगे।

गांधी जी का अहिंसक संघर्ष भारतीयों को अपने अधिकारों और स्वतंत्रता के प्रति जागरूक करने में सफल रहा, और उन्होंने भारत को ब्रिटिश साम्राज्य से मुक्त करने के लिए एक नये तरीके का नेतृत्व प्रदान किया।

4. भारत सरकार अधिनियम, 1935 टिप्पणी कीजिए।

भारत सरकार अधिनियम, 1935 ब्रिटिश शासन का एक महत्वपूर्ण संवैधानिक दस्तावेज था, जो भारत में शासन के तरीके को निर्धारित करता था। यह अधिनियम ब्रिटिश संसद द्वारा पारित किया गया था और इसमें भारतीयों को कुछ सीमित स्वायत्तता देने का वादा किया गया था, लेकिन साथ ही ब्रिटिश नियंत्रण को बनाए रखा गया।

इस अधिनियम के कुछ प्रमुख तत्व थे:

- **संघीय व्यवस्था**: इस अधिनियम के तहत एक संघीय व्यवस्था बनाई गई, जिसमें केंद्र और राज्य के बीच शक्तियों का वितरण किया गया।
- **प्रांतों में स्वायत्तता**: प्रांतों को कुछ स्वायत्तता दी गई, जैसे कि अपनी विधानसभा का गठन और कुछ नीतिगत मामलों में निर्णय लेने की स्वतंत्रता।

Scholarly Minds

- **राज्य परिषद**: इसमें केंद्रीय और प्रांतीय विधायिकाओं में भारतीय प्रतिनिधियों की संख्या बढ़ाई गई, लेकिन निर्णय लेने की अंतिम शक्ति ब्रिटिश गवर्नर जनरल और उनके मंत्रिमंडल के पास रही।
- **मुलायम और कठोर प्रावधान**: इस अधिनियम ने भारतीय नेताओं को कुछ अधिकार दिए थे, लेकिन ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ विरोध और संघर्ष करने के लिए अधिकारों की कोई वास्तविक सुरक्षा नहीं थी।

हालांकि यह अधिनियम भारतीयों को कुछ स्वायत्तता प्रदान करता था, लेकिन यह पूरी तरह से ब्रिटिश शासन के नियंत्रण में था। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और अन्य प्रमुख राजनीतिक दलों ने इसे असंतोषजनक माना और इसे अस्वीकार कर दिया, क्योंकि यह भारत की पूर्ण स्वतंत्रता की दिशा में एक कदम भी नहीं था।

5. महालवाड़ी बंदोबस्त पर टिप्पणी कीजिए।

महालवाड़ी बंदोबस्त एक प्रमुख भूमि व्यवस्था थी जिसे **लॉर्ड कोर्नवॉलिस** द्वारा 1793 में लागू किया गया। यह व्यवस्था मुख्य रूप से **बंगाल, बिहार और उड़ीसा** में लागू हुई, और इसके तहत ज़मींदारों को भूमि के स्वामित्व का अधिकार दिया गया।

इस व्यवस्था के तहत:

- ज़मींदारों को भूमि का स्वामित्व मिला, और वे किसानों से लगान वसूलने के लिए जिम्मेदार थे।
- ज़मींदारों को निश्चित कर (लगान) निर्धारित किया गया था, जिसे वे किसानों से वसूलते थे।
- ज़मींदारों को कर का एक निश्चित हिस्सा सरकार को देना पड़ता था, लेकिन उनके पास किसानों से अतिरिक्त कर वसूलने का अधिकार था।

महालवाड़ी बंदोबस्त का मुख्य उद्देश्य सरकार को नियमित राजस्व प्राप्त करना था, लेकिन इसने किसानों पर अत्यधिक दबाव डाला। ज़मींदारों ने किसानों से बहुत अधिक कर वसूलना शुरू किया, जिससे कृषक समुदाय में असंतोष बढ़ा। किसानों को भूमि का कोई स्थायीत्व नहीं था, और वे हमेशा लगान के भारी बोझ के नीचे दबे रहते थे।

यह व्यवस्था भारतीय कृषि में स्थिरता और समृद्धि लाने में असफल रही, और इसके कारण भारतीय ग्रामीणों की स्थिति और भी अधिक खराब हो गई। इसके विपरीत, ज़मींदारों और ब्रिटिश सरकार को इसका फायदा हुआ, लेकिन भारतीय किसानों के जीवन में कोई सुधार नहीं हुआ।

Scholarly Minds